ईश्वर का “ना” – सफलता का मार्गजब भगवान “ना” कहते हैं, तो यह
सफलता का मार्ग होता है

जब भगवान “ना” कहते हैं, तो यह आपकी प्रार्थना का अस्वीकार नहीं है, बल्कि आपको कुछ महानतर की ओर मार्गदर्शन करना है। भगवान का “ना” अक्सर उनके श्रेष्ठ योजना का प्रवेश द्वार होता है – ऐसा कुछ जो आपने कभी कल्पना भी नहीं किया होगा।

दाऊद की इच्छा – एक मंदिर बनाने की

दाऊद, जो ईश्वर के हृदय के अनुसार पुरुष था (प्रेरितों के काम 13:22), भगवान के नाम के लिए एक मंदिर बनाने की सच्ची इच्छा रखता था। वर्षों के युद्ध और साम्राज्य की स्थापना के बाद, वह भगवान का सम्मान करना चाहता था और उनका स्थायी निवास बनाने की योजना बनाई। दाऊद ने इस भव्य योजना के लिए संसाधन, धन और सामग्री इकट्ठा की। लेकिन जब उसने अपने योजना को भगवान के सामने रखा, तो उत्तर वैसा नहीं था जैसा उसने सोचा था।

1 इतिहास 22:7-8 में दाऊद अपने पुत्र सुलैमान से कहते हैं:

“मेरे पुत्र, मैं यह भवन यहोवा, मेरे परमेश्वर के नाम के लिए बनाना चाहता था।
परन्तु यहोवा का वचन मुझ पर आया: ‘तुमने बहुत रक्त बहाया और बहुत युद्ध किए। तुम मेरे नाम के लिए भवन मत बनाओ, क्योंकि तुमने पृथ्वी पर मेरे सामने इतना रक्त बहाया है।’” (ERV

Hindi)

दाऊद का हृदय भले ही शुद्ध था और उसकी इच्छा पवित्र थी, लेकिन भगवान का उद्देश्य उसके लिए अलग था। भगवान ने दाऊद के सपने को अस्वीकार नहीं किया, बल्कि एक अलग योजना बनाई, जो सुलैमान के माध्यम से पूरी होगी। यह हमें याद दिलाता है कि भगवान के मार्ग हमारे मार्ग से ऊँचे हैं (यशायाह 55:8-9)। भगवान की योजना अक्सर हमारी योजना से आगे होती है, और उनका समय हमेशा परिपूर्ण होता है, भले ही हम इसे समझ न पाएं।

भगवान के “ना” पर धार्मिक विचार

यह पद एक महत्वपूर्ण सच्चाई को उजागर करता है: भगवान के निर्णय हमेशा उनकी अनंत बुद्धि द्वारा निर्देशित होते हैं। कभी-कभी, जब भगवान हमें वह नहीं देते जो हम गहराई से चाहते हैं, तो हमें अस्वीकारित महसूस हो सकता है। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि भगवान हमें क्रूरता से नहीं रोकते। बल्कि वह हमारे जीवन को अपने शाश्वत उद्देश्यों के अनुसार गढ़ रहे हैं।

जैसा कि रोमियों 8:28 में कहा गया है:

“हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उनके
लिए सभी बातें भलाई के लिए होती हैं, जिन्हें उसने अपने उद्देश्य अनुसार बुलाया है।” (ERV Hindi)

भले ही हम न समझें कि भगवान “ना” क्यों कहते हैं, हमें विश्वास करना चाहिए कि वे हमेशा हमारे सर्वोत्तम हित के लिए कार्य कर रहे हैं।

दाऊद को भले ही मंदिर बनाने की अनुमति नहीं मिली, लेकिन उसकी विरासत बनी रही। भगवान की महिमा का मंदिर सुलैमान, दाऊद के पुत्र, के माध्यम से आएगा। यह हमें सिखाता है कि हम हमेशा अपने सपनों को पूरा नहीं कर सकते, लेकिन भगवान हमारे जीवन का उपयोग दूसरों के लिए महान कार्यों के मार्ग प्रशस्त करने में कर सकते हैं।

विनम्रता और भगवान की इच्छा को स्वीकारना

दाऊद को उस समय विनम्रता सीखनी पड़ी। मंदिर बनाने की उसकी इच्छा गलत नहीं थी; यह भगवान के प्रति उसके प्रेम में गहराई से निहित थी। लेकिन भगवान की योजना अलग थी। यह “ना” दाऊद के लिए आज्ञाकारिता और बड़े उद्देश्य के प्रति समर्पण दिखाने का अवसर था।

याकूब 4:6 हमें याद दिलाता है:

“परमेश्वर घमंड करने वालों का विरोध करता है, परन्तु विनम्रों को अनुग्रह देता है।” (ERV Hindi)

भगवान का “ना” अक्सर हमारे व्यक्तिगत योजनाओं को उनके बड़े उद्देश्य के लिए छोड़ने का आह्वान होता है।

लूका 22:42 में यीशु ने खुद इस प्रकार की आत्मसमर्पण दिखायी:

“पिता, यदि तू चाहो तो यह प्याला मुझसे हटा दे; पर मेरा नहीं, तेरा मत पूरा हो।” (ERV Hindi)

यीशु, अपनी मानवता में, अलग परिणाम चाहते थे, लेकिन उन्होंने पिता की इच्छा को नम्रता से स्वीकार किया, जानते हुए कि भगवान की योजना संसार के उद्धार के लिए थी।

भगवान का समय और परिपूर्ण योजना

जब भगवान “ना” कहते हैं, तो वे आपको अस्वीकार नहीं कर रहे हैं; वे केवल यह पुष्टि कर रहे हैं कि उनका समय परिपूर्ण है। सभोपदेशक 3:11 में कहा गया है:

“उसने सब कुछ सुंदर बना दिया अपने समय पर।” (ERV Hindi)

हर उद्देश्य के लिए उनके पास समय और मौसम है। जो चीज़ हमें देरी या अस्वीकार लगती है, वह अक्सर कुछ महान के लिए दिव्य तैयारी होती है।

दाऊद का मंदिर बनाने का सपना महान था, लेकिन भगवान जानते थे कि उनका पुत्र सुलैमान इसे पूरा करेगा। सुलैमान का शासन शांति से भरा था, जिसे दाऊद अपने कई युद्धों के कारण अनुभव नहीं कर पाए (1 इतिहास 22:9)। भगवान का “ना” दाऊद के लिए अस्वीकार नहीं था; यह केवल पुष्टि थी कि मंदिर का सही समय सुलैमान के शासन में है। कभी-कभी हमारे सपनों को हमें पार कर जाना होता है, और भगवान हमारे जीवन का उपयोग अपने उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए करते हैं।

भगवान का “ना” – महान महिमा की ओर मार्ग

दाऊद का भगवान की इच्छा को नम्रता से स्वीकार करना अंततः महान महिमा की ओर ले गया। सुलैमान ने मंदिर का निर्माण किया, और इसे बड़े सम्मान के साथ समर्पित किया गया (1 राजा 8:10-11)। भगवान की महिमा ने मंदिर को भर दिया, और उनकी उपस्थिति इस प्रकार प्रकट हुई जिसने इस्राएल के इतिहास को चिन्हित किया।

लेकिन मंदिर का सच्चा विरासत, इसके निर्माण का सम्मान, दाऊद से जुड़ा रहा। 2 शमूएल 7:16 ने भविष्यवाणी की कि दाऊद का घर, राज्य और सिंहासन अनंतकाल तक रहेगा, जो अंततः यीशु मसीह में पूरा हुआ, जो दाऊद के पुत्र हैं (मत्ती 1:1)।

यह हमें सिखाता है कि भगवान का “ना” हमारी महत्वता का अस्वीकार नहीं है, बल्कि यह हमें बड़े उद्देश्य और महिमा की ओर मार्गदर्शन करता है। हम पूरी तस्वीर नहीं देख सकते, लेकिन हमें विश्वास है कि भगवान हमें अपने राज्य के लिए उपयोग कर रहे हैं, भले ही हमें अनदेखा किया गया हो।

रोमियों 8:18 हमें याद दिलाता है:

“मैं मानता हूँ कि वर्तमान दुःखों की महत्ता उस महिमा के
सामने कुछ भी नहीं, जो हमारे अंदर प्रकट होगी।” (ERV Hindi)

भगवान की योजना में हमारी अस्वीकृतियाँ भी उनके महिमामय योजना का हिस्सा हैं।

भगवान की कृपा को “ना” में स्वीकार करना

ऐसे समय आते हैं जब हम कुछ चीज़ें प्राप्त नहीं कर पाते, भले ही हम उसके लिए प्रार्थना करते हों। उस समय, हमें नियंत्रण छोड़कर विश्वास करना चाहिए कि भगवान की कृपा पर्याप्त है।

2 कुरिन्थियों 12:9 कहता है:

“परमेश्वर ने मुझसे कहा, मेरी कृपा तेरे लिए पर्याप्त है; क्योंकि मेरी शक्ति कमज़ोरी में पूर्ण होती है।” (ERV
Hindi)

भगवान का “ना” यह नहीं दर्शाता कि उन्होंने आपको भुला दिया है। इसका अर्थ है कि उनके पास आपके लिए कुछ बेहतर है, जो उनके बड़े उद्देश्य को पूरा करेगा। जब हम उनके मार्ग पर चलते हैं और उनके मार्गदर्शन पर भरोसा रखते हैं, तो हम यह सत्य जान सकते हैं कि भगवान हमेशा हमारे भले के लिए काम कर रहे हैं, भले ही उत्तर वैसा न हो जैसा हमने उम्मीद की थी।

भगवान का “ना” – बड़े सफलता का मार्ग

भगवान का “ना” कहानी का अंत नहीं है। यह अक्सर कुछ और महान की शुरुआत होता है।

मत्ती 19:29 कहता है:

“और जो मेरे नाम के कारण घर, भाई-बहन, पिता-माता, बच्चों या
खेत को छोड़ता है, उसे सौगुना मिलेगा और वह अनन्त जीवन पाएगा।” (ERV Hindi)

आपको वह नहीं मिला जो आपने सोचा था, लेकिन विश्वास रखें कि भगवान की योजना आपके लिए आपकी सबसे बड़ी कल्पना से भी परे है।

इफिसियों 3:20 कहता है:

“जो सब बातों से अधिक करने में सक्षम है, उससे वह सब कर सकता है, जैसा हम सोचते या मांगते हैं, उसके सामर्थ्य के अनुसार
जो हमारे भीतर काम करता है।” (ERV Hindi)

यदि आप उनकी इच्छा में चलते हैं और उनके समय पर भरोसा करते हैं, तो भगवान की कृपा आपको आपकी कल्पना से परे ले जाएगी।

निष्कर्ष

मुख्य बात यह है: जब भगवान “ना” कहते हैं, तो यह अस्वीकार नहीं है, बल्कि कुछ महान की ओर दिव्य मार्गदर्शन है। भगवान की बुद्धि, समय और योजना पर विश्वास करें। उनका “ना” आपके लिए बड़े सफलता, गहरी आस्था और उनके राज्य में उच्च उद्देश्य का मार्ग है। उनके मार्ग पर चलते रहें, यह जानते हुए कि उनकी कृपा पर्याप्त है और उनकी महिमा ऐसे तरीके से प्रकट होगी, जिसे हम अभी पूरी तरह नहीं समझ सकते।

Share on:
WhatsApp